क्रियायोग आश्रम व अनुसंधान संस्थान

संचालन द्वाराः योग सत्संग समिति/क्रियायोग सत्संग समिति
संस्थापक-अध्यक्ष : श्री गुरुदेव स्वामी श्री योगी सत्यम्

मातृ केन्द्र व मुख्यालय
झूँसी, इलाहाबाद-211019
उत्तर प्रदेश, भारत
दूरभाष : 0532-2569243
मोबाइलः 9415217277/81
ई-मेलःyogisatyam@hotmail.com

उत्तरी अमरीका केन्द्र :
योग फेलोशिप टेम्पुल
388 प्लेन्स रोड, किचनर. ओन्टोरिया
कनाडा, एन 2 आर 1 आर 8
दूरभाष : 001-519-696-3869
ई-मेलः kriyayoga.canada@yahoo

बेवसाइटः kriyayoga-yogisatyam.org
क्रम संख्या .....

वर्तमान समय आरोही द्वापर का 313 वाँ वर्ष है
दिनॉक :

प्रकाशनार्थ

क्रियायोग अन्तरगंगा में स्नान करने का विज्ञान

अगर कुम्भ मेला, माघमेला, प्रयाग क्षेत्र आध्यात्मिक स्थल है तो यहाँ पर हिंसा क्यों है ?

प्रेस वार्ता के दौरान पूछे गये महत्वपूर्ण प्रश्नों का समाधान

31 जनवरी 2013 इलाहाबाद । मुक्ति मार्ग पर सेवारत क्रियायोग शिविर में अन्तर्राष्ट्रीय संत क्रियायोग वैज्ञानिक स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने आध्यात्मिक जगत में व्याप्त कुरूपताओं और उसके निवारण पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि कुम्भ मेले को पावन आध्यात्मिक स्थल माना जाता है जहाँ विश्व के कोने-कोने से लोग मुक्ति पाने के असीम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आते हैं । ऐसे पावन स्थल पर हिंसा क्यों दिखायी पड़ती है ? क्या कारण है कि माघमेला, कुम्भ मेला जो समस्त तीर्थों का पावन स्थल है तथा जिसे प्रयाग राज कहा गया है, में सुरक्षा व्यवस्था के लिए पुलिस प्रशासन की आवश्यकता पड़ती है ? क्रियायोग शिविर में कार्यक्रम के दौरान एक प्रेम वार्ता को संबोधित करते हुए स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने स्पष्ट किया कि जब तक मनुष्य साधना करके अपने अंदर की गंगा, संगम, त्रिवेणी में स्नान करने का ज्ञान नहीं प्राप्त कर लेगा तब तक मात्र बाह्य स्नान से पूर्ण शुद्धता (निर्मल अवस्था - मोक्ष) की प्राप्ति संभव नहीं है । आंतरिक गंगा में स्नान करने पर ही बाह्य गंगा में स्नान का पूर्ण लाभ प्राप्त होता है ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने आगे कहा कि गंगा परम निर्मल अवस्था का प्रतीक है । गंगा के जल में किसी भी प्रकार का विकार, सड़न-गलन आदि नहीं होता है । क्रियायोग ध्यान के द्वारा मानव स्वरूप में परम निर्मल निर्विकार अवस्था प्रकट हो जाती है । क्रियायोग ध्यान के द्वारा स्वरूप को मात्र जागृत अवस्था में ही नहीं बल्कि शरीर छोड़ने

के बाद भी इसको पूर्णतया निर्विकार अवस्था में बनाये रखा जा सकता है । क्रियायोग के इतिहास में अनेक संतों ने शरीर छोड़ने के बाद भी शरीर में किसी भी प्रकार के मरने के चिन्ह सड़न-गलन-बदबू अथवा शरीर के आकार-प्रकार में विघटन की क्रिया को प्रभावहीन बनाये रखने की अलौकिक क्षमता को प्रदर्शित किया है । इस प्रकार स्वरूप में पूर्ण निर्विकार अवस्था का प्रकटन ही अन्तःकरण में गंगा का अवतरण है । जिस दिन सभी लोग क्रियायोग ध्यान के द्वारा अन्तरगंगा को प्रकाशित करने की कला का ज्ञान प्राप्त कर लेंगे उनके अंदर से हिंसा वृत्ति का पूर्ण समापन हो जाएगा और बाह्य जगत में वे अहिंसा की शक्ति को चतुर्दिक वितरित करने की क्षमता प्राप्त कर लेंगे ।

अन्तरगंगा पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डालते हुए स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने कहा कि संत तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में स्पष्ट रूप से कहा है कि गंगा, संगम, त्रिवेणी, समस्त तीर्थ तथा धाम हर देश तथा हर काल में सुलभ हैं । मानव स्वरूप समस्त तीर्थों का तीथ है जहाँ निरन्तर गंगा, यमुना, संगम, त्रिवेणी आदि की अलौकिक मुक्तिदायिनी धाराएँ प्रवाहित होती रहती हैं । उन्होंने आगे कहा कि मानव स्वरूप में सिर व रीढ़ के अंदर सूक्ष्म सर्वव्यापी शक्ति का प्रवाह होता रहता है जिसे आत्मधन, प्राणतत्व, जीवन तत्व आदि कहा गया है । सिर व रीढ़ में प्राणशक्ति का नीचे से ऊपर (उर्ध्वमुखी) प्रवाह तीव्र होने पर साधक अपने अंदर गंगा का दर्शन करता है । ऐसी अवस्था में उसके अंदर समस्त दैव शक्तियाँ प्रकाशित होने लगती हैं जिन्हें दम, शम, तितिक्षा, उपरति, श्रद्धा, समाधान कहा गया है तथा आसुरी शक्तियों का प्रभाव निष्कृय होने लगता है जिन्हें काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद् , मत्सर कहा गया है । क्रियायोग साधना के दौरान किस प्रकार सिर व रीढ़ में प्रवाहित होने वाले सूक्ष्म ज्ञान तत्व के उर्ध्वमुखी प्रवाह को बढ़ाया जाय का विधिवत् अभ्यास कराया गया ।

क्रियायोग शिविर में प्रतिदिन प्रातः, दोपहर व सायं क्रियायोग प्रशिक्षण एवं अभ्यास का कार्यक्रम विस्तारपूर्वक बड़े ही प्रभावशाली रूप में सम्पन्न हो रहा है जिसमें भारत, अमरीका, कनाडा, ब्राजील, रूस, गयाना, सिंगापुर, आस्ट्रेलिया आदि देशों से आये हुए लोग भाग लेकर शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक लाभ प्राप्त कर रहे हैं ।

- योगमाता